**Today’s Poem – 29.09.2014**

**बाप कल्प-कल्प आकर हम बच्चों को अपना परिचय देते**

**और सद्गति करते**

**बाबा आपका परिचय देना बहुत मुश्किल ऐसा बच्चे कहते**

**बाप ऐसा सुनकर वंडर खाते**

**मैं आत्मा अकाल तख्त नशीन हूँ इस स्मृति में रहना**

**हद और बेहद से पार जाना**

**इसलिए हदों में बुद्धि नहीं फँसाना**

**बेहद बाप से बेहद की मिलकियत मिलती है, इस नशे में रहना**

**कर्म-अकर्म-विकर्म की गति को जान विकर्मों से बचना**

**पढ़ाई के समय धन्धे आदि से बुद्धि निकालना**

**सच्ची साधना द्वारा हाय-हाय को वाह-वाह में परिवर्तन करना**

**ओम् शान्ति**

**मेरा बाबा**

****